RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 74, अंक : 44 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 21 जनवरी , 2018

विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक : 44, 18-21 जनवरी 2018 तदनुसार 8 माघ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

इसी जन्म में तेरी सेवा करें

लेo–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन्दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून्।
क्रीळन्तस्त्वा सुमनसः सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्।।

–ऋ० ४।४।९

शब्दार्थ–मनुष्य **अनु+द्यून्** = प्रतिदिन **दोषावस्तः** = दिन-रात **दीदिवांसम्** = चमकने वाले **त्वा** = तुझको **इह** = यहीं **त्मन्** = अपने आत्मा से, सर्वात्मना **भूरि** = बहुत-बहुत **उप+आ+चरेत्** = सेवन करे। हम **जनानाम्** = लोगों के **द्युम्ना** = धनों, तेजों का **अभि+तस्थिवांसः** = दबाते हुए **क्रीळन्तः** = खेलते हुए **सुमनसः** – उत्तम मनवाले होकर **त्वा** = तुझे **सपेम** = मिलें, पूजें।

व्याख्या–मनुष्यजन्म के प्रयोजन पर ध्यान देने से एक बात अत्यन्त स्पष्ट प्रतीत होती है कि खाना, पीना, जागना, चलना, बैठना, हर्ष, शोक, प्रसाद, विषाद, भूख, प्यास, मैथुनादि मनुष्यों और पशुओं दोनों में हैं, किन्तु मनुष्य में एक ऐसी वस्तु है जो पशु-पक्षियों में नहीं है। पशु-पक्षी अपनी उन्नति के उपाय करते हुए नहीं दीखते, इसके विपरीत मनुष्य अपनी उन्नति के लिए सदा विचार करता रहता है। केवल इसी जन्म के सुख के लिए नहीं, वरन् इस जन्म के बाद की स्थिति [परलोक] को भी उत्कृष्ट बनाने के साधनों की कल्पना करता है। इस संसार में पुत्र, कलत्र, मित्र, माता, पिता, बन्धु-बान्धव, धन, धान्य, गृहवास, सम्पत्ति, राज्य, शासन आदि उसे सुख-साधन प्रतीत होते हैं। जब उसे इन सबके होते हुए भी सुख नहीं मिलता, अथवा इच्छित सुख की अपेक्षा न्यून सुख मिलता है तो वह अकुला जाता है और वास्तविक सुख की खोज करता है। उसे ज्ञात होता है कि–**'वि यस्तस्तम्भ रोदसी चिदुर्वी। प्र नाकमृष्वं नुनुदे बृहत्तम्'** [ऋ० ७।८६।१] = जो इन विशाल द्यावापृथिवी को थाम रखता है, वही इस अति महान् सुख को प्रेरित करता है।

सुखान्वेषी को सुख के मूलस्त्रोत का ज्ञान हो गया है। तब उसे उसका सेवन करना चाहिए। इस बात को वेद इन शब्दों में कहता है–**'इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन्'** = इसी जन्म में मनुष्य सर्वात्मना तेरी बहुत-बहुत उपचर्या करे। यह कार्य ऐसा नहीं कि इसे कल पर छोड़ा जा सके। जाने कल को काल आ जाए! जी-जान इस कार्य में लगा देनी चाहिए। जैसे किसी ने कहा है–**'कार्यं वा साधयेयं शरीरं वा पातयेयम्'** = या कार्य सिद्ध करूँगा या शरीर नष्ट करूँगा। सारांश यह है कि मरना या बढ़ना ही मनुष्य के सामने होना चाहिए, अतः **'दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून्'** = प्रतिदिन, रात-प्रभात उस चमकीले की सेवा करे, अर्थात् नियमपूर्वक लगातार उसकी आराधना करनी चाहिए। यह नहीं कि एक दिन अर्चना की और दस दिन नागा ही कर दिया। जैसे शरीर-पोषण के लिए नित्य और नियमित रूप से निश्चित समय पर भोजन करने से अभीष्ट सिद्धि होती है, ऐसे ही आत्मपुष्टि के लिए भी नित्य नियमित रूप से निश्चित समय पर भगवदाराधना करनी चाहिए। इस प्रकार उसकी अर्चा-आराधना प्रतिदिन करने से परमोत्तम लाभ होता है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वर्ष 2018 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2018 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। इस वर्ष कैलेण्डर का मूल्य पाँच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

तमध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम्।
यजिष्ठं मानुषे जने।। –ऋ० ५.१४.२

भावार्थ–जगत्पिता परमात्मा अन्तर्यामीरूप से मनुष्यमात्र के अन्दर विराजमान है, वही अमर और सबका पूजनीय है, उसी की यज्ञादि उत्तम कर्मों में बड़े प्रेम से उपासना करनी चाहिए। जिन यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों में, उस अमर और पूजनीय प्रभु की उपासना, प्रार्थना प्रेम से की गई हो, वह यज्ञादि कर्म निर्विघ्न समाप्त होते और अत्यन्त कल्याण के साधक बनते हैं।

देव यज्ञ

ईश्वर भक्ति, मानवता, विश्व शान्ति का परम मार्ग

-ले. आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

यज्ञ शब्द सुनते पढ़ते ही मस्तिष्क में प्राय: एक ऐसी विधा प्रक्रिया का ज्ञान आभास देने लगता है, जिसमें अग्नि जलाकर घृत, अन्न, मिष्ट, औषध आदि रूप द्रव्य आहूत कर दिया जाता है। 'यज्ञ कस्मात्' (निरुक्त 3/19) तो क्या यज्ञ इस स्वाहा विधि का ही नाम है अथवा यज्ञ इतना ही है, या फिर यज्ञ नाम व्यवस्था अपने अन्तस् में कुछ और भी सार तथा समाहित किये हुए है?

तो आयें, इस सन्दर्भ में सदा मानवता को समर्पित सत्य सनातन ज्ञान राशि वेद व ऋषिचरणाभिमुख होकर कुछ तात्त्विक मन्थन करते हैं। हम देखते हैं कि संसार एक उत्तम व्यवस्था का नाम है अर्थात् संसार में सर्वत्र हमें गति नियम आदि की एक रस अनवरत अविरल व्यवस्था दिखाई दे रही है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह रूप बड़े बड़े लोक-लोकान्तर भी निरन्तर अबाधित एक विशेष व्यवस्था में गतिशील हैं। 'सम्यक् सरति' ऐसा करके मानो संसार शब्द की संसरता, प्रगतिशीलता को ही उद्घाटित कर रहे हैं। साथ ही मानव आदि प्राणी शरीर के अभ्यन्तर अंगों में भी बड़ी ही कुशल और पारस्परिक पूरक व्यवस्था कार्य कर रही है, जो कि अपने इष्ट (इन्द्रियमिन्द्र-अष्टा, 5/2/93) इन्द्र आत्मा को भोग हव्य द्रव्य प्रदान कर उसे वृद्ध, समृद्ध, तृप्त करने का प्राणपण से कार्य कर रही है। महर्षि याज्ञवल्क्य के शब्दों में इसी को 'पाङ्क्तो यज्ञ:' (शत. 1/5/2/16) कहा जाता है। किन्तु यह पाङ्क्त व्यवस्था कोई साधारण व्यक्ति नहीं बना सकता। क्योंकि 'अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता।' (यजु. 14/20); 'देवो दानाद्वा' (निरु. 7/15)। ये सब देवता दिव्य शक्तियां जिस व्यवस्थित रूप में निरन्तर सञ्चालित हो रही हैं और जगत् में प्राणियों का सतत हित साधन कल्याण कर रही हैं, उन्हें कोई जड़ चेतन, सभी देवताओं का देवता, महादेव अर्थात् प्रजापति विश्वपति परमेश्वर ही नियमन सुव्यवस्था प्रदान कर सकता है।

इसलिये 'तस्माद यज्ञात् सर्वहुत...' (यजु. 31/7)

जितनी भी लोकोपकारक धारक दिव्य शक्तियां हैं, वे सब यज्ञ जिसके आज्ञा पालन रूप में सब आहुति तप त्याग बलिदान किये जाते हैं, उस परमेश्वर के द्वारा ही नि:सृत संसृत हैं। इस प्रकार जब स्वयं ईश्वर यज्ञ है तो उसके द्वारा सृजित यह संसार भी यज्ञ स्थल अथवा यज्ञ रूप ही है। इसी कारण ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुसार सम्पादित किया जाने वाला प्रत्येक कर्म विधान, जिसमें लोक हितार्थ हव्य प्रदान किया जाता है वह भी यज्ञ रूप ही है।

इसलिये 'यज्ञो वै जनतायै कल्पते' (म.द. ऋ. भा. भूमिका) यज्ञ अग्नि जलाकर आहुति प्रदान करना मात्र नहीं है, अपितु मनसा वाचा कर्मणा विश्व मंगल अर्थात् लोक मानव हित में व्यवस्थित समर्पित हो जाने का नाम यज्ञ है। वैसे अग्नि में उत्तम हव्य आहुति प्रदान रूप यज्ञ करना भी स्वयं में पर्यावरण जलवायु शोधन ईश्वर आज्ञा पालन संगति सन्तुलन का प्राकृतिक स्वाभाविक रूप से सामर्थ्य रखता है। क्योंकि वैज्ञानिक प्रक्रिया में न तो कोई पदार्थ सर्वथा अभाव को प्राप्त होता है और न ही इसमें विकृति दुर्गन्ध आदि विद्रूपता को प्राप्त होकर वातावरण को विषाक्त ही बनाता है। वरन् अपने विशिष्ट सूक्ष्म वायव्य आदि रूप में परिवर्तित होकर जड़ चेतन या स्थावर जंगम रूप समस्त देवों, दिव्य शक्तियों और प्राणी जगत् का शोधन परिशोधन व सङ्गठन, गुणवर्धन हो शक्ति सामर्थ्य ही बढ़ाता है। इसलिये यज्ञ परमेश्वर की लोक कल्याणकारी व्यवस्था का एकमात्र नाम व सर्वोत्तम मूर्त्त रूप है। जो आज विभिन्न विकृत रूपों में संसार के प्राय: आर्येतर (हिन्दुओं से अतिरिक्त ईसाई, मुसलमान, पारसी आदि) सभी मत सम्प्रदायों में भी पाई जाती है। यह इस यज्ञ का सर्वमान्य व्यापक 'यो वै विष्णु: स यज्ञ:' (शत. 5/2/3/6) रूप है। वस्तुत: यह यज्ञ और यज्ञीय व्यवस्था, ईश्वर आज्ञा पालन और प्रकृति पोषण सन्तुलन की दिव्य प्रक्रिया को स्वयं में आधृत कर देव पूजा और दान रूप सत्कर्म के फलितार्थ में मनुष्य समाज के संगत करने का मूल मन्त्र है।

आज विश्वभर का मनुष्य समुदाय हमें कहीं भी समाज संगत श्रेष्ठ पारस्परिक स्नेहिल गति मति वाला संगठित नहीं दिखाई देता। तो उसके पीछे कारण यज्ञ व यज्ञीय भाव व्यवस्था का अभाव ही है। प्रकाश की अनुपस्थिति में अन्धकार जगत् को आवृत कर ही लेता है। क्योंकि यह नियम है कि जब देवता (उत्तरदायी जिम्मेदार) लोग अपना दायित्व निर्वहन नहीं करते अथवा देव पितर जनों के शिक्षा सन्देशों की सन्तानें उपेक्षा अवमानना करने लगती हैं तो पारस्परिक पूरक धारक व्यवस्था परम्परा विलुप्त हो जाती है-''उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धि:, इतरयान्ध परम्परा' (सांख्य 3/79/81) जिससे परिवार, समाज, विश्व संस्थाओं का अस्तित्व प्रभुत्व क्षीण होने लगता है और व्यक्ति प्राय: अहम्मन्य स्वच्छन्द अथवा स्वयं को निरंकुश सा मानने लग जाता है। यही स्थिति आज हम सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में देख रहे हैं। जिसके कारण मानव समुदाय में सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक धर्म अर्थात् एक दूसरे के पूरक रूप में प्रेम स्नेह से देखने की भावना कम से कमतर होती चली जा रही है। जबकि यज्ञ धर्म हमको 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' (यजु. 36/18) और 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:' (अथर्व. 12/1/12) अर्थात् जो भूमि को धारक पोषक मातृदेव मानकर सम्पूर्ण पृथिवी का स्वयं को पुत्र अनुरक्षक मानता हुआ धराधाम वासी समस्त भूत प्राणियों के प्रति मत सम्प्रदायों की संकीर्णताओं, वर्जनाओं से परे होकर यज्ञवत् निश्छल, निष्कपट व्यवहार कर रहा है, वही सच्चे अर्थों में देव यज्ञ कर रहा है। यानि ऐसे महाशय ने ही देवों के स्वरूप को समझा है और वही देवों का अनुकरण कर सत्यार्थ में देवत्व की ओर अग्रसर हो रहा है। क्योंकि देवगण जो यज्ञ सदाचरण करते हैं, मनुष्य उन माता, पिता, आचार्य आदि चेतन देवों की शुभाज्ञादि का पालन, सेवा, सत्कार, तर्पण और अग्नि, जल, वायु, सूर्य, चन्द्र आदि जड़ देवों की शक्ति गति आदि का परिज्ञान अनुकरण कर स्वयं भी दिव्य गुणों से युक्त हो देवत्व को प्राप्त करता है, तभी उसका देवयज्ञ पूर्ण होता है।

इस प्रकार यज्ञ समाज, संसार में सर्वत्र अभिव्याप्त हो सबकी पूरकता निकटता का पूजनीय सेतु बन मनुष्य को सम्प्रदाय, साम्प्रदायिकता से ऊपर उठाने का एकमात्र स्वाभाविक, सहज, सरल उपाय एवं जगत् पिता जगदीश्वर की भक्ति, आज्ञा पालन, हृदय व कार्मिक उपासना का सर्वोत्तम साहचर्य साधन एवं प्रकृति नियमन सन्तुलन का कारक है-'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' (शत. 1/7/1/5)। इसलिये सब मनुष्यों को देव यज्ञ करना व यज्ञीय भाव व्यवस्था को समझना, अपनाना धर्म अर्थात् सर्वथा सर्वदा पालनीय कर्त्तव्य है। आर्यावर्त भारतवर्ष के पुरातन राजाओं महाराजाओं व ऋषि महर्षियों ने इसी के आधार पर विश्वम्भर धर्म साम्राज्य स्थापित किये, जिन्हें सच्चे अर्थों में मानवता सौहार्द शान्ति धर्म का सुराज्य कहा जा सकता है। जबकि वैदेशिक, वैधर्मिक, साम्प्रदायिक मत मजहबों के जाल में जकड़े लोगों ने राज्य सत्ता शक्ति का बलात् दुरुपयोग व छल कपट कर लोगों के अन्दर भय, भूख, उन्माद, दहशत, लूट खसोट, पराधीनता, गुलामी, बेकारी, बेगारी, अन्याय, शोषण, विघटन, हिंसा, साम्प्रदायिकता, धर्मान्तरण का भीषण विषाक्त वातावरण तैयार किया है। जिससे मनुष्य समुदाय व सारा संसार आज अशान्त असुरक्षित हो अपने पराये के वर्गवाद, फिरका-परस्ती में बंटा है और वे अपने उन तथाकथित, अपने धर्मध्वजी वर्ग बन्धुओं के बीच भी सुरक्षित नहीं है। यदि वैदिक यज्ञ व यज्ञीय भावना (स्वाहा इदन्न मम) का सब लोग राष्ट्र अनुपालन करे तो सभी वैश्विक समस्याओं का समाधान हो समरसता बन्धुता स्थापित की जा सकती है-'नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय (यजु. 31/18)। यही शान्ति का परम सनातन समरसता मार्ग है, अन्य नहीं।

सम्पादकीय

केन्द्रीय विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना का विरोध करना भारतीय संस्कृति का अपमान

पिछले दिनों भारत की सर्वोच्च अदालत में केन्द्रीय विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना पर रोक लगाने सम्बन्धी याचिका दायर की गई और भारत की सर्वोच्च न्यायपीठ ने केन्द्रीय विद्यालयों में प्रतिदिन होने वाली प्रार्थना पर रोक लगाने सम्बन्धी याचिका को विचारार्थ स्वीकार किया है। सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को पक्ष रखने के लिए चार हफ्ते का समय देकर पूछा है कि केन्द्रीय विद्यालयों में प्रार्थना क्यों होनी चाहिए? याचिकाकर्ता ने अनुसार संस्कृत और हिन्दी में प्रार्थना करने से छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में बाधा आ रही है। इस प्रकार के तथ्यहीन और निराधार तर्क देकर प्रार्थना का विरोध करना भारतीय संस्कृति का अपमान है।

प्रार्थना होनी चाहिए या नहीं? प्रार्थना हिन्दी में हो या संस्कृत में हो? यह विवाद का विषय नहीं है। परन्तु विचार इस विषय पर होना चाहिए कि प्रार्थना के द्वारा बच्चों को क्या सन्देश मिल रहा है? क्या प्रार्थना के द्वारा किसी धर्म का या मत का प्रचार किया जा रहा है? अगर प्रार्थना के द्वारा बच्चों के अन्दर अच्छे भाव पैदा हो रहे हैं, उन्हें अच्छी प्रेरणा मिल रही है, उनके अन्दर नैतिक गुणों का विकास हो रहा है तो फिर यह प्रार्थना क्यों नहीं होनी चाहिए। किस आधार पर इस प्रार्थना का विरोध किया जा रहा है? **असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय।।** भारतीय संस्कृति के आधारस्तम्भ इन वाक्यों का विरोध करने के पीछे कोई ठोस तर्क है? असत्य से सत्य की ओर चले, अन्धकार से प्रकाश की ओर चले, मृत्यु से अमरता की ओर चले इन वाक्यों में जो प्रार्थना की गई है , क्या इसका विरोध करने का कोई कारण है? जो याचिका दायर करने वाले लोग हैं या जो प्रार्थना का विरोध करने वाले लोग हैं वो अपने बच्चों को झूठा, मक्कार, मूर्ख, चोर आदि बनाना चाहते हैं? क्या वो नहीं चाहते कि हमारे बच्चे सत्य के मार्ग पर चले? अपनी अज्ञानता के अन्धकार को दूर करते हुए ज्ञानी व धर्म के मार्ग पर चलने वाला बनें? दूसरी प्रार्थना है कि ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ऐसे हों हमारे कर्म, नेकी पर चले और बदी से बचें ताकि हँसते हुए निकले दम।। इस प्रार्थना में कौन सी बुराई याचिकाकर्ता को लगी यह प्रश्न भी सर्वोच्च न्यायालय को याचिका दायर करने वाले से पूछना चाहिए। क्या नेकी के मार्ग पर चलना गुनाह है? क्या हम अपनी युवा पीढ़ी को आतंकवादी बनाना चाहते हैं? जो इस तरह की प्रार्थना का विरोध कर रहे हैं।

प्रार्थना का संस्कृत या हिन्दी में होना कोई मुद्दा नहीं है। मुकद्दमे को विचारार्थ स्वीकार करना न्यायालय का संवैधानिक अधिकार है। परन्तु प्रश्न इस बात का है कि इस प्रकार की याचिका दायर करने वाले लोग मदरसों में होने वाली प्रार्थना को बन्द कराने के लिए याचिका दायर कर सकते हैं? क्या कान्वेंट स्कूलों में होने वाली ईसा ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल प्रार्थना का कोई विरोध कोई कर सकता है? फिर ये भारतीय संस्कृति के आदर्श वाक्यों का किस आधार पर विरोध किया जा सकता है जिसमें किसी धर्म विशेष का वर्णन नहीं है, किसी प्रकार की साम्प्रदायिकता का समावेश नहीं है, किसी प्रकार की संकीर्ण मानसिकता के परिचायक नहीं हैं। क्या विरोध करने का यही एक तर्क रह गया है कि प्रार्थना हिन्दी या संस्कृत में है। हिन्दी या संस्कृत में प्रार्थना होना किसी धर्म का प्रतीक कैसे हो गई? आज के इस युग में जिसमें वैज्ञानिकों ने भी यह प्रमाणित कर दिया है कि संस्कृत भाषा सबसे पूर्ण और वैज्ञानिक है, वेद मन्त्रों के उच्चारण से स्मरण शक्ति बढ़ती है फिर वैदिक प्रार्थना से छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में किस प्रकार बाधा आ रही है? क्या कोई इसका प्रबल प्रमाण है?

अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर इस देश के टुकड़े करने के नारे लगाना सही है, आतंकवादियों की फांसी पर रोना मानवता है परन्तु जब बात राष्ट्रगान या राष्ट्रगीत की आती है, प्रार्थना की आती है तो सभी तथाकथित सैक्यूलर बुद्धिजीवी रोना शुरू कर देते हैं। जिस देश में भारत तेरे टुकड़े होंगे, अफजल हम शर्मिंदा हैं तेरे कातिल जिन्दा हैं, इसे अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर सही ठहराया जाता है वहीं राष्ट्रगीत गाने से और प्रार्थना करने से साम्प्रदायिकता फैलती है, धर्मनिरपेक्षता के लिए खतरा पैदा होता है। कल को यही लोग प्रधान न्यायाधीश के कक्ष के पास संस्कृत में ही यतो धर्मस्ततो जयः, ध्येय वाक्य लिखा हुआ है। महाभारत से उद्धृत इस वाक्य का अर्थ है जहां धर्म है, वहीं विजय है। इस आदर्श वाक्य को हटाने के लिए याचिका दायर करेंगे। भारत के प्रतीक चिह्न तीन शेरों व चक्र के नीचे सत्यमेव जयते छपा है, यह भी संस्कृत में है। क्या इस वाक्य को हटाने के लिए कोई याचिका दायर करेगा तो माननीय सर्वोच्च न्यायालय इसे भी स्वीकार कर लेगा।

बात सिर्फ याचिका दायर करने की या याचिका स्वीकार करने की नहीं है अपितु इसके पीछे होने वाले षडयन्त्र की है। इस तरह हमारी संस्कृति और सभ्यता को तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इस प्रकार के आदर्श वाक्य जिनका धर्म से किसी प्रकार से कोई सम्बन्ध नहीं है जो मनुष्य को प्रेरणा देने वाले हैं उनका विरोध करना उचित नहीं है। बच्चों के अन्दर इस प्रकार की प्रार्थना से अच्छे भाव आते हैं। अपने माता-पिता, गुरूओं व राष्ट्र के प्रति सम्मान का भाव पैदा होता है। क्या आज माता-पिता यह नहीं चाहते कि उनकी संतान मातृभक्त, पितृभक्त व राष्ट्रभक्त बनें? इसलिए इस समय अभिवावकों को खुलकर सामने आने की आवश्यकता है। उन्हें इस बात का समर्थन करना चाहिए कि ऐसी प्रार्थना कभी भी बन्द नहीं होनी चाहिए। ऐसे संस्कृत के आदर्श वाक्य जो संसद से लेकर हर संस्था के ऊपर प्रेरणा के रूप में लिखे हुए हैं। फिर स्कूल में बच्चों के द्वारा प्रार्थना करने में कौन सी हानि है।

याचिकाकर्ता और इस षडयन्त्र में उनके पीछे लगे हुए लोगों का उद्देश्य क्या है? इस बात का पता चलना चाहिए। भारतीय संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष के लिए प्रार्थना नहीं करती किन्तु उसका उद्देश्य **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।** के रूप में सामूहिक होता है। प्रार्थना के द्वारा सबके कल्याण की कामना की जाती है। इसलिए किसी भी चीज का विरोध करने का इस प्रकार निम्न स्तर नहीं होना चाहिए। इसलिए आज हमें इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि हम अपनी युवा पीढ़ी को, अपने बच्चों को कहां ले जाना चाहते हैं? किस प्रकार के गुणों का विकास करना चाहते हैं? वैदिक प्रार्थना के नाम पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। इससे राष्ट्र व समाज को बचाने की आवश्यकता है। इस प्रकार के स्वार्थी मानसिकता वाले लोगों का विरोध होना चाहिए। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के नाम पर भारतीय संस्कृति और सभ्यता का अपमान नहीं किया जा सकता। आज विदेशों में संस्कृत भाषा को विशेष महत्व दिया जा रहा है वहीं अपने ही देश में उसे समाप्त करने के कुत्सित प्रयास हो रहे हैं। इसलिए आज हमें जागरूक होने की आवश्यकता है। वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहितः इस वेद की सूक्ति के अनुसार हम राष्ट्र के जागरूक प्रहरी बनें ताकि कोई भी हमारी संस्कृति और सभ्यता का हनन करने का प्रयास न कर सके।

प्रेम भारद्वाज

संपादक एवं सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्राचीन भारत की संस्कृति व संस्कारों की पुनरावृत्ति करके युग की धारा ही बदल डाली

-ले. पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

महाभारत युद्ध के बाद भारत वर्ष का इतिहास ही बदल गया था। भारतवासी अपनी प्राचीन वैदिक संस्कार संस्कृति, व सभ्यता को भूल गये थे। परिणामस्वरूप विश्व गुरू भारत अराजकता और उच्च चरित्र संस्कारहीनता के कारण विदेशियों का गुलाम बन गया था। और मानव जीवन के निर्माण के 16 संस्कार प्राय: लुप्त हो गये थे। यदि कहीं दो तीन संस्कार बचे हुए भी हैं तो यहीं वैदिक रूप में है कहीं अवैदिक रूप में प्रचलित हैं। और वैदिक संस्कार केवल आर्य समाज के पुरोहितों द्वारा संस्कार विधि के अनुसार किये जाते हैं। चतुर अवसरवादी अनार्ष ज्ञान रखने वाले धर्म के ठेकेदारों ने विकृत धर्म और संस्कार व संस्कृति के द्वारा अपना-अपना मत बनाकर दुकानें खोल रखी थी। जन साधारण भारतवासी बुरी तरह से इन धर्म के ठेकेदारों के चंगुल में फंस गये थे।

इतिहास गवाह है जब-जब मानवों ने ईश्वरीय नियम व सृष्टिक्रम व वैदिक संस्कारों की अवहेलना की तब-तब मनुष्यता मरती चली गई। आत्म रक्षा, धर्म रक्षा, समाज रक्षा, और राष्ट्रीय रक्षा के आधार वैदिक संस्कार होते है। और जब यह ही समाप्त हो गये थे, या विकृत बन गये, तो विदेशियों ने इस गिरावट का लाभ उठाया और विश्व गुरू भारत को गुलाम बनाकर नोंच डाला। इस भीषण बिभीषिका से बचाने की किसी भी धर्म गुरू को कोई चिन्ता नहीं थी चिन्ता थी तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने की।

ईश्वर की कृपा से अठाहरवीं सदी में युग पुरूष महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ था यह भी सत्य है कि युग पुरूष संसार के कल्याण के ही लिए जन्म लेते है। यह भी सत्य है कि जब-जब ईश्वरीय वैदिक धर्म समाप्त होने लगता है तो चारों ओर अनैतिकता का वातावरण पैदा हो जाता है। तब ईश्वरीय व्यवस्था से महापुरूष सीधे मोक्ष से लौटकर अधर्म का नाश करने को जन्म लेते है। वह कर्मयुक्त जीव होते है, संसार के बन्धनों में नहीं फंसते है। और संसार को सत्य मार्ग दिखाते-दिखाते अपना जीवन तक बलिदान कर देते है।

महर्षि दयानन्द जी ने भी रण क्षेत्र में उतरकर सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ी अर्थों पर प्रहार करके उनको इतिहास परक न मानकर यौगिक अर्थ किये। और उन्होंने समझा था कि सम्पूर्ण भारत में संस्कार हीनता का कारण वेदों के अर्थों का गलत अर्थ करके समाज को दिशाहीन कर दिया है। उन्होंने तत्कालीन तमाम विद्वानों से शास्त्रार्थ किये और वेदों के अर्थों को संसार के सामने रखा। यह एक अदभुत वैचारिक क्रान्ति थी। जमाने के साथ न चलकर जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। एक नई वैचारिक क्रान्ति का जन्म हुआ।

संस्कार विधि: महर्षि दयानन्द ने समाज में चल रहे विकृत संस्कारों को वेदानुकूल बनाने हेतु संस्कार विधि का निर्माण किया और संस्कार विधि में सोलह संस्कारों के द्वारा पूर्ण मानव बनाने की योजना तैयार की। उन्होंने समझा संस्कार जन्म से ही बदले जा सकते है उन्होंने संस्कार विधि में संविधान किया कि बालक माता के गर्भ से ही तीन संस्कार होने चाहिए वह थे गर्भाधान, पुंसवन, तथा सीमन्तोन्नयन संस्कार। और जन्म होने के पश्चात् जातकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्ण भेद, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास और अन्त्येष्टि कर्म जो दूसरों द्वारा किया जाता है। ये मानव को पूर्ण मानव बनाते है।

उनकी योजना थी कि यदि बालकों को उक्त संस्कारों की भट्टी में तपाया जाए तो युवा होने पर 25 वर्ष की अवस्था में एक नये युग का निर्माण हो सकता है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी का स्थान नई पीढ़ी लेती है। यदि समस्त परिवार सोलह संस्कारों को विधिवत करने लगेंगे तो एक आदर्श युग का निर्माण प्रारम्भ हो जायेगा और वैदिक संस्कारों पर चलने से तमाम अनार्ष साहित्य मान्यतायें व क्रियायें समाप्त हो जायेंगी।

सत्यार्थ प्रकाश का निर्माण: महर्षि दयानन्द जी ने अनार्ष ज्ञान कर्मों को समाप्त करने के लिए कालजयी ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश के चौदह सम्मुलासों में पूर्ण रूप से मानव बनाने का निर्देश दिया। सत्यार्थ प्रकाश ने समाज में एक हलचल मचा दी। कथित धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिलाकर रख दी। संसार सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर आश्चर्य-चकित रह गया कि अब तक संसार वासिंयों को कैसे मूर्ख बनाया जा रहा था। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ ने एक नया इतिहास ही रच दिया। सत्य ज्ञान प्राप्त करा दिया।

आर्यसमाज का गठन: युग पुरूष दूरदर्शी होते है, महर्षि जी ने समझा कि यदि सोलह संस्कारों का चलन नियमित होता रहे और और आर्ष विचारों का प्रचार सदैव होता रहे, उसके लिये एक आर्ष संगठन ही होना चाहिए। उन्होंने कोई भी प्रचलित मत या नया मत न बनाकर आर्य समाज का गठन किया या यों कहें महाभारत के पश्चात्, प्राचीन आर्य संगठन की पुनरावृत्ति की। और जब तक संसार में आर्य समाज रहेगा। आर्ष विचारों का प्रकाश पुंज प्रकाशित होता रहेगा। यह भी मानव निर्माण योजना थी।

गुरूकुलों का निर्माण: महर्षि दयानन्द जी के वेदों के आर्ष विचारों से प्रभावित होकर आर्यों ने पूर्ण मानव बनने हेतु भारत में प्राचीन स्तर पर गुरूकुलों की स्थापना कर दी।

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों से निवेदन: महर्षि दयानन्द जी ने मानव निर्माण की पूर्ण योजना हम आर्यों के समक्ष रखी। ज्यों-ज्यों आर्य समाज की उमर बढ़ रही है, वैसे-वैसे हम आर्य समाज के अनुयायी महर्षि के सिद्धान्तों से हटते जा रहे हैं। उन्होंने कल्पना की थी इस योजना से सारा संसार आर्य बन जायेगा, किन्तु हम स्वयं पूर्ण आर्य नहीं बन पा रहे हैं। हम अपने हृदय पर हाथ रख कर सोचें क्या हम अपने बालकों के पन्द्रह संस्कार कर रहे है। 16वां तो अन्तेष्टि कर्म परिवार करता है। आर्यों के परिवार भी पाश्चात्य सभ्यता के शिकार होते चले जा रहे। केवल तीन चार संस्कार ही अधिकांश आर्यों के घरों में होते है। आर्य समाज के 141 वर्षों में हमने क्या खोया क्या पाया।

आज सन्यासी, वानप्रस्थ व प्रतिनिधि सभायें व प्रमुख आर्य अपनी-अपनी महत्वकांक्षाओं को पूर्ण करने में संघर्षरत हैं। हम आर्य, आर्य समाज की आत्मा पर आघात कर रहे है। उचित मार्ग दर्शन सन्यासी वर्ग व नेतृत्व व पुरूषार्थी आर्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं। आइये हम आज के आर्य समाज को गति देने के लिए, महर्षि दयानन्द जी के उक्त सिद्धान्तों पर चलेंगे तो निश्चय ही भविष्य में सम्पूर्ण भारत आर्य बन जायेगा या अपने विचारों को बदलने पर मजबूर हो जायेगा।

आर्य स्कूल की छात्राओं ने मनाई लोहड़ी

आर्य गर्ल्ज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बठिण्डा में पंजाब का प्रसिद्ध त्योहार लोहड़ी दिन शुक्रवार दिनांक 12-01-2018 को मनाया गया। स्कूल प्रांगण में लोहड़ी जलाई गई। स्कूल प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी एवम् स्टाफ ने अग्नि में तिल अर्पित करके समाज से दरिद्रता और तमाम बुराइयों को मिटाने का आह्वान किया। छात्रों ने रंगारंग कार्यक्रम पेश किया। दसवीं की छात्रा प्रिंयका ने स्वच्छ भारत पर 'घर विच रखियों सफाई' गीत पेश किया। +1 आर्टस की तनु एण्ड टीम ने स्वच्छता अभियान पर स्किट पेश किया। छोटे बच्चों ने लोहड़ी पर कविताएं तथा पंजाबी गीतों पर डांस किया। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने लोहड़ी त्योहार की महत्ता बताए हुए कहा कि लोहड़ी खुशियाँ ही नहीं बल्कि भाईचारे और प्रेम का संदेश भी देती हैं। मैडम कटारिया ने बच्चों को लोहड़ी की मुबारक दी। श्रीमती चन्द्रकान्ता जी ने मंच का संचालन किया। मैडम अनिता सयाल जी ने स्कूल में लोहड़ी के अवसर पर अनुशासन रखने में अपना योगदान दिया। विद्यार्थियों को स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल जी, उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग जी, मैनेजर श्री निहाल चन्द जी की तरफ से लोहड़ी तथा मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर बधाई दी तथा मूँगफली और रेवड़ी का प्रसाद बाँटा गया।

-सुमन, आर्य गर्ल्ज़ हाई स्कूल, बठिण्डा

सत्यविद्या और पदार्थविद्या का आदिमूल

ले.-डॉ. रामबाबू आर्य आर्य समाज हिण्डोन सिटी, ज़िला करौली (राज०)

(गतांक से आगे)

व्यक्ति, परिवार, समाज, नीति-शास्त्र, समाजविद्या, राजनीति, अर्थ-शास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र, कृषि, सिंचाई, ज्योतिष चिकित्सा विज्ञान, वर्षा, उद्योग धन्धे, औषधि एवं गणितशास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, अन्तरिक्ष विज्ञान, शस्त्रविद्या, सैन्य संचालन, ऋतु विज्ञान, भूगर्भविद्या, शिक्षा, मनोविज्ञान आदि एक भी ऐसा विषय नहीं जिसका ज्ञान मनुष्य के एहिलौकिक अथवा परलौकिक जीवन के लिये आवश्यक हो और जो वेदों में उपलब्ध न हो।

सर्वद्रष्टा प्रभु ने जिस जिस अर्थ का जिस जिस नाम से मन्त्रों में उपदेश किया है उस उस नाम वाले देवता का वह मन्त्र कहलाता है। वेदों में देवों की स्तुति का असाधारण रूप मिलता है। सभी देवों का देव महादेव स्वयं परमात्मा है। उसकी स्तुति भी अनायास वेदों में मिलती है। वेदों में पृथिवी-स्थानीय, अन्तरिक्षस्थानीय तथा द्युस्थानीय तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन है। इन्द्रियगोचर, इन्द्रियातीत प्रत्यक्ष-परोक्ष, जड़-चेतन, सूक्ष्म-स्थूल सभी कुछ मन्त्र का विषय हो सकता है। वैचारिक सुविधा की दृष्टि से इनको तीन वर्गों में विभाजित किया है-

(1) अग्नि, जल, वायु, वनस्पति आदि भूमिज पदार्थ जिन पर मुख्यत: लोक का जीवन आधारित है इनका भू-स्थानीय देवताओं में समाविष्ट हो जाता है।

(2) मरुत, पर्जन्य, विद्युत् आदि का अन्तरिक्ष-स्थानीय देवताओं में समाविष्ट हो जाता है।

(3) आदित्य, नक्षत्र आदि का द्यु-स्थानीय देवताओं में समाविष्ट हो जाता है।

औषधि, वनस्पति, पर्जन्य, वायु, मरुत, आप, सूर्य, मेघ, विद्युत, ऊषा, चन्द्रमा, सरिता, समुद्र, मित्र और इसी प्रकार के भौतिक एवं प्राकृतिक द्रव्यों के रूप में प्रतीयमान देवता है जिनका वर्णन अनेक सूक्तों या मन्त्रों में मिलता है। इन्हीं देवताओं के माध्यम से वेद में वर्षा, सिंचाई, कृषि, औषधि, वनस्पति, ऋतु, भौतिकी, यातायात, भोजन, वस्त्र, भूगर्भशास्त्र, सृष्टि विज्ञान आदि का वर्णन मिलता है। वेदों में मन्त्रों द्वारा आलङ्कारिक वर्णन मिलता है। जैसे अनावृष्टि की अवस्था में आकाश में मेघ फिरते रहते हैं, किन्तु बरसते नहीं। तब इन्द्र उन्हें उन्हीं में अन्तर्निहित शक्ति के रूप में स्थित विद्युत के द्वारा छिन्न-भिन्न करके बरसा देता है। पुरुष, आत्मा, यम, रुद्र, भाव, विनाश, मन, वाक्, श्रद्धा आदि को आध्यात्मिक कोटि में रखा जाता है।

वेदमन्त्र चूंकि सत्य विद्याओं को प्रकाशित करते हैं, अत: उन्हें ऋचा कहा जाता है। इन मन्त्रों से तीन प्रकार के अर्थ प्रकाशित होते हैं-

(1) परोक्षरूप में अर्थ करने वाले-इन मन्त्रों में प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम का प्रयोग होता है तथा क्रियाओं में अस्ति, करोति, भवति का प्रयोग होता है। जड़ पदार्थों के लिये साधारणतया प्रथम पुरुष का ही प्रयोग होता है। जैसे परमेश्वर द्युलोक का स्वामी है, परमेश्वर पृथिवीलोक का स्वामी है, परमेश्वर जल का स्वामी है, परमेश्वर पर्वतों का अधिपति है, परमेश्वर महान् से महान् आत्माओं का राजा है और परमेश्वर मेधावी मनुष्यों का शासक है। वह परमेश्वर प्राप्त वस्तुओं के संरक्षण के लिये प्रार्थनीय है और वही परमेश्वर अप्राप्त वस्तुओं की प्राप्ति के लिये आवाहन किये जाने योग्य है।

(2) प्रत्यक्ष रूप में अर्थ करने वाले-प्रत्यक्षकृत मन्त्रों में मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम त्वम् आदि का तथा क्रियाओं में असि, भवसि, करोषि आदि का प्रयोग होता है। प्राय: चेतन पदार्थों के लिये मध्यम पुरुष का प्रयोग होता है, परन्तु जड़ पदार्थ भी यदि प्रत्यक्ष हो तो कभी कभी उनके लिये भी मध्यम पुरुष का प्रयोग होता है। वेद में ऐसा संवादशैली के कारण होता है जैसे-हे परमेश्वर! तू बल से उत्पन्न हुआ है, अत: तू बल स्वरूप है। हे परमेश्वर! तू साहस का भण्डार है, तू ओजोमय है, हे वृष्टिकर्ता! तू वास्तव में सुखों की वर्षा करने वाला है।

(3) अध्यात्मरूप में अर्थ करने वाले-अध्यात्म अर्थ कहने वाले मन्त्रों में उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम अहम् का प्रयोग होता है तथा क्रियाओं में अस्मि, भवामि, करोमि का प्रयोग होता है। उत्तम पुरुष का प्रयोग केवल चेतन पदार्थों के लिये होता है।

परमात्मपरक मन्त्र का उदाहरण-हे मनुष्यों! मैं सनातन परमेश्वर सम्पूर्ण जगत् का स्वामी हूँ। मैं अन्य सनातन जीवात्माओं, प्रकृति का तथा सब धर्मों अर्थात् कार्य जगत् का विजय करता हूं। सभी जीव मुझे पिता ही पुकारते हैं। मैं सबको सुख पहुंचाने वाले मनुष्य को उत्तमोत्तम भोग्य सामग्री प्रदान करता हूँ।

जीवात्मापरक मन्त्र का उदाहरण-सर्वमेध यज्ञ करने का इच्छुक व्यक्ति दृढ़तापूर्वक अपने संकल्प को व्यक्त करते हुए कहता है कि मेरा संकल्प है कि मैं गाय, घोड़ा, आदि सम्पूर्ण सम्पत्ति का दान कर दूं, क्योंकि मैने योगेश्वर का भरपूर पान कर लिया है।

वेद में परोक्षकृत और प्रत्यक्षकृत मन्त्र बहुत अधिक हैं, परन्तु आध्यात्मिक मन्त्र थोड़े ही हैं। अत: वेदों में तत्त्वज्ञान परोक्षरूप या प्रत्यक्षरूप में अधिक पाया जाता है।

वेद मन्त्र मानव सृष्टि से पहले ही विद्यमान थे। मानव सृष्टि के साथ ही वे अभिव्यक्त हो गये थे। जिन मन्त्रों में मनुष्यों का उल्लेख है उनका देवता मनुष्य ही है। उनमें किसी नामधारी मनुष्यों के इतिहास की कल्पना नहीं की जा सकती। वेद में सामान्य अर्थों में ही मनुष्य का उल्लेख होता है। विशिष्ट गुण सम्पन्न अथवा कर्त्तव्यपरायण मनुष्यों की सामान्य रूप से प्रशंसा की गई है। जिन मन्त्रों का प्रतिपाद्य मनुष्य है चाहे वह माता, पिता आचार्य, अतिथि, विद्वान् आदि कोई भी हो उनका देवता मनुष्य है। अपने अपने सामर्थ्यानुसार ये कुछ ना कुछ दूसरों को देकर उपकार करते हैं। माता-पिता, आचार्य आदि पालन-पोषण और संस्कार द्वारा दूसरे मनुष्यों का उपकार करते हैं।

जिस इन्द्रिय का जो विषय है उससे वही जाना जा सकता है। परमेश्वर इन्द्रिय का विषय नहीं है, अत: वह न तो आंखों से देखा जा सकता है, न कानों से सुना जा सकता है, न ही त्वचा से उसका स्पर्श हो सकता है और न मन से उसे विचारा जा सकता है।

सृष्टि में उपलब्ध व्यवस्था तथा नियमों की एकरूपता उसके स्रष्टा के एकत्व की साक्षी है। जीवात्माओं के अनेक होने से भिन्न-भिन्न विचारों वाले होने के कारण उनमें परस्पर संघर्ष होने की सम्भावना बनी रहती है। अत: जगत् की उत्पत्ति का उसके व्यापार का अधिकार केवल परमेश्वर को ही है। इस प्रकार परमात्मा ही इस सम्पूर्ण सृष्टि का आदि निमित्त कारण है। यद्यपि जीव और प्रकृति भी आदि कारण है, परन्तु वे सदा एक रस नहीं रहते, समय समय पर उनके रूप में परिवर्तन होता रहता है। परमेश्वर पहले भी इसी रूप में था और भविष्य में भी इसी रूप में रहेगा। अग्नि, वायु, आदित्य आदि की उत्पत्ति उसी से होती है। सारे देवता उस ही के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। जिस देवता में जितना गुण है उसमें उतना ही देवत्व है। उन गुणों का उपयोग कर उनसे लाभ उठाना उनकी पूजा है।

उपास्यदेव केवल एक महादेव परमेश्वर है जो विविध रूप में अनेक शक्तियों के माध्यम से समस्त लोकों में व्याप्त है। उसका संविधान वेदों के रूप में है जो आदि सृष्टि में ही संसार के कल्याण हेतु प्रकट किया। सभी प्रकार की सत्य विद्या (पराविद्या) और पदार्थविद्या (अपराविद्या) का आदिमूल है।

अत: सभी सत्यविद्या और पदार्थविद्या का आदिमूल परमेश्वर है, क्योंकि उसका यह शाश्वत ज्ञान वेद के माध्यम सृष्टि में, ऋषियों के माध्यम से मानव को प्राप्त हुआ। अत: यह हमेशा सत्य है कि-

(1) वेद अपौरुषेय अर्थात् ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है।

(2) वेद और सृष्टि दोनों ही एक ईश्वर की रचना हैं, इस कारण उनमें परस्पर कोई विरोध हो ही नहीं सकता।

(3) वेद भ्रम, प्रमाद आदि दोषों से रहित ईश्वर की वाणी है, जो जीवों के कल्याण हेतु परमेश्वर ने प्रदान की।

(4) शिक्षा, कल्प, छन्द, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, धर्मशास्त्र, पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान, साहित्य, कला, शिल्प, राजनीति, आयुर्वेद, गन्धर्ववेद, वास्तुशास्त्र सभी विषयों के मुख्य ग्रन्थ स्वयं को वेदमूलक होने की घोषणा करते हैं। अत: वेद समस्त विद्याओं (सत्यविद्या एवं पदार्थविद्या) का मूल है जो परमपिता परमेश्वर की वाणी है। इस वाणी और अखण्ड ज्ञान का मूल परमेश्वर है। यह ज्ञान नित्य परमात्मा से प्रादुर्भूत हुआ जो पूर्ण एवं नित्य है, जो सर्ग के आरम्भ में समूचा ज्ञान एक साथ आविर्भूत हुआ।

(5) प्रत्येक सृष्टि के आदि में वेद उत्पन्न होते हैं तथा प्रलयकाल में विलीन हो जाते हैं, फिर भी वे नित्य हैं। वेद का कोई उपादान कारण नहीं है, अत: प्रलयकाल में उसके विलीन होने का प्रश्न ही नहीं उठता। वे ईश्वर के ज्ञान में सदा स्थित होते हैं। वेद ज्ञान तो परमात्मा का गुण है।

हिन्दू राष्ट्र या भारतवर्ष ?

ले०-सुशील कुमार शर्मा 115, करतार ऐनकेलेव, बस्तीशेख जालन्धर (पंजाब)

भारतीय सभ्यता संस्कृति विश्व में अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक साहित्य भारतीय आध्यात्मिकता तथा संस्कृति का आदि स्रोत है। वैदिक साहित्य में सप्त सिन्धु प्रदेश अर्थात् सात नदियों वाले प्रदेश का वर्णन मिलता है। यह प्रदेश आधुनिक अफगानिस्तान से प्रारम्भ होकर गंगा के पश्चिमी क्षेत्र तक जाता है। सरस्वती, सिन्धु तथा पंजाब की पाँच नदियों वितस्ता असिक्नी परूष्णी, विपासा तथा शतुद्रि, इन सात नदियों के कारण इस प्रदेश को सप्त सिन्धु प्रदेश कहा गया है। अनेक इतिहास-कार इसी प्रदेश को आर्यों का आदि निवास स्थान मानते हैं। यही प्रदेश विदेशियों के लिए भारत में प्रवेश का मुख्य द्वार रहा है। अत्यन्त प्राचीन राष्ट्र होने के कारण इस देश को समय-समय पर अनेक नामों से पुकारा गया है, जैसे आर्यवर्त्त, आर्यभूमि, भारत, भारतवर्ष, ब्रह्मवर्त्त, भरत खण्डे, हिन्दुस्तान, इण्डिया इत्यादि।

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व (326 ई. पू.) यूनानियों ने सिकन्दर के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किया। यूनानियों ने सिन्धु नदी या क्षेत्र को इण्डस कहा जिससे कालांतर में भारत का नाम इण्डिका या इण्डिया पड़ा। आठवीं शताब्दी में अरबों ने सिन्ध पर विजय पाई तथा 11वीं एवं 12वीं शताब्दी में इस्लामी तुर्कों (मदमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी) ने भारत पर कई हमले किये। मध्ययुग में इस्लामी आक्रान्ताओं के साथ भारत आने वाले मुस्लिम इतिहासकारों ने अपने वृतान्तों में सिन्धु के आधार पर भारत को हिन्द के नाम से पुकारा। उदाहरण स्वरूप अलबेरूनी जो 11वीं शताब्दी हमलावर सुल्तान महमूद के साथ भारत आया उसने भारत के विषय में लिखी अपनी पुस्तक तारीख-उल-हिन्द'' में भारत के लिए हिन्द शब्द का प्रयोग किया। इसी से समस्त मुस्लिम शासन के दौरान भारत का नाम हिन्दुस्तान पड़ा।

स्पष्ट है कि भारत को हिन्दुस्तान या इण्डिया नाम विदेशियों द्वारा दिये गये हैं जिनका प्राचीन भारतीय सभ्यता, इतिहास व संस्कृति से कोई सम्बंध नहीं है। वर्तमान में कुछ हिन्दुत्व समर्थक हिन्दू संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में संस्कृत भाषा के शब्द सिन्धु: तथा इन्दु: के आधार पर हिन्दू शब्द की उत्पत्ति की कपोल कल्पना की गई है जो पूर्णतया निराधार और भ्रामक है। इसी के आधार पर भारत को हिन्दू-राष्ट्र बताकर महिमा मंडित किया जा रहा है। संस्कृत भाषा में सिन्धु: तथा इन्दु: शब्दों का अर्थ क्रमश: सागर तथा चन्द्रमा है। इन संस्कृत शब्दों को विकृत करके इनसे 'हिन्दू' शब्द गढ़ने का प्रयास अत्यन्त भ्रामक व दुर्भाग्यपूर्ण है। उसी प्रकार हिमालय शब्द से 'हि' लेकर उसे इन्दु: शब्द के साथ मिलाकर 'हिन्दू' शब्द गढ़ना पूर्णतया गलत व भ्रामक है। हिमालय में दो शब्दों की संधि है, हिम+आलय। हिमालय से केवल 'हि' शब्द क्यों लिया गया पूरा शब्द 'हिम' क्यों नहीं लिया गया? मनमाने ढंग से इस प्रकार संस्कृत भाषा के शब्दों को विकृत करके नये शब्द की उत्पत्ति नहीं की जा सकती। वास्तव में 'हिन्दू' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द नहीं है और न ही किसी संस्कृत भाषा के शब्द कोश में इसका उल्लेख मिलता है। यह भी एक अकाटय प्रामाणिक तथ्य है कि चारों वेदों, छह शास्त्रों, प्राचीन उपनिषदों, रामयण, महाभारत जिसमें श्री मद्भगवद्गीता भी सम्मिलित है तथा सम्पूर्ण बौद्ध ग्रन्थों में एक भी हिन्दु शब्द नहीं है। फिर विदेशियों द्वारा दिये गये किसी विकृत शब्द के आधार पर भारत का 'हिन्दू राष्ट्र' नामकरण करना कहाँ तक न्यायोचित है? संस्कृत एक नियमबद्ध पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। 'संस्कृत' शब्द का अर्थ ही 'शुद्ध' है। सिन्धु: तथा इन्दु: शब्दों को अपने शुद्ध मूल रूप में ही रहना चाहिए, इन्हें विकृत करने का प्रयास निरर्थक तथा अदूरदर्शितापूर्ण है। सिन्ध या सिन्धु को आज भी सिन्ध या सिन्धु नाम से ही पुकारा जाता है। हमारे राष्ट्रगान में भी सिन्धु शब्द को लिया गया है।

इस प्राचीन राष्ट्र के नाम तथा भौगोलिक सीमाओं को रेखांकित करते हुए मनु-स्मृति में लिखा है,

सरस्वतीहषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त प्रचक्षेते 2।।96।। मनु०

अर्थात् सरस्वती और हषद्वतीं इन देवनदियों के मध्य में जो देश है वह देवताओं द्वारा निर्मित है, उसको ब्रह्मावर्त कहते हैं। 22।।96।।

आसमुद्रात् वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरे वान्तरं गिर्योरार्यावर्त विदुर्बुधा:।।2।।22।।

अर्थात् पूर्वसमुद्र से पश्चिम समुद्र तक और हिमालय से विन्ध्याचल के बीच में जो देश है, उसको विद्वान लोग आर्यावर्त्त कहते हैं। 2।।2।।

वराहमिहिर ने अपनी वृहत्संहिता में लिखा है,

भारतवर्षे मध्यात्प्रागादि विभा-जिता: देशा:।
अथ दक्षिणेन लङ्काकालाजिन सौरिकीर्णतालीकटा: (१४ अ०)

अर्थात् भारतवर्ष में मध्य से पूर्वादि देशों का विभाग है और दक्षिण में लंका, कालाजिन, सौरिकीर्ण तथा तालीकट देश है।

महाभारत के आदि पर्व के अध्याय तीन में इस प्राचीन राष्ट्र के नामकरण के विषय में लिखा है,

दुष्यन्तस्तु तदा राजा पुत्रं शाकुन्तलं तदा।
भरतं नामत: कृत्वा यौवराज्येऽभ्यषेचयत्।।
महा० आदि पर्व, अ० द्र०।।992।।

तत्पश्चात् महाराज दुष्यन्त ने शकुन्तला कुमार का नाम 'भरत' रखकर उसे युवराज के पद पर अभिषिक्त कर दिया। ।।992।।

स राजा चक्रवर्त्यासीत् सार्वभौम: प्रतापवान्।
ईजे च बहुभिर्यज्ञैर्यथा शक्रो मरूत्पति:।।992।। महा० आदि पर्व. अ० इ।।

महाराज भरत सम्पूर्ण भूमण्डल में विख्यात, प्रतापी एवं चक्रवर्ती सम्राट थे। उन्होंने देवराज इन्द्र की भान्ति बहुत से यज्ञों का अनुष्ठान किया।।११३।। महा०

भरताद् भारती कीर्तिर्येनेदं भारतं कुलम्।
अपरे ये च पूर्वे वै भारत इति विश्रुता:।।११४।। महा० आदि पर्व अ० ३।

भरत से ही इस भूखण्ड का नाम भारत हुआ। उन्हीं से यह कौरव वंश भरत वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके पश्चात् उस कुल में पहले तथा आज भी जो राजा हो गये हैं, वे भारत (भरतवंशी) कहे जाते हैं।

श्रीमद्भगद्गीता के चौथे अध्याय के सातवें श्लोक में श्रीकृष्ण कहते हैं,

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि-र्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।४।।६।। गीता

इस श्लोक में श्रीकृष्ण अर्जुन को 'भारत' कहकर सम्बोधित करते है। सार्वकालिक महानतम वैदिक विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी पुस्तक सत्यार्थ-प्रकाश: में इस प्राचीन राष्ट्र का नाम आर्यावर्त्त तथा भारत ही स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार प्राचीन ऐतिहासिक एवं साहित्यिक तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि इस राष्ट्र का नाम भारत है और यही नाम सार्थक एवं न्याय संगत है। हमारे राष्ट्रीय गान में भी इसे भारत कह कर पुकारा गया है। समस्त देशभक्त भारतवासी चाहे वे हिन्दू हों, मुस्लिम हों, सिक्ख, ईसाई या बौद्ध हों गर्व से इसे स्वीकार करते हैं। 17वीं शताब्दी में मुगलकाल में छत्रपति शिवाजी ने महाराष्ट्र में एक हिन्दू राज्य की स्थापना की थी क्योंकि उस समय धर्मान्ध मुस्लिम शासक औरंगजेब सम्पूर्ण भारत को एक मुस्लिम राष्ट्र बनाना चाहता था। कालांतर में इस हिन्दू राज्य का बृहत् भारत राष्ट्र में विलय हो गया। हमारा भारत विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, जातियों एवं संस्कृतियों से मिलकर बना है। सदियों से लोग इसमें मिल जुल कर रहते आये हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध या पारसी कहलाने में कुछ आपत्ति नहीं है और ऐसा करने की सबको स्वतन्त्रता है। लेकिन एक राष्ट्र के रूप में हम सभी भारतीय हैं और राष्ट्रहित को सर्वप्रथम स्थान दिया जाना चाहिए। भिन्नता होना स्वाभाविक है लेकिन भिन्नता के आधार पर समाज में वैमनस्य की भावना उत्पन्न होना दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन जब हिन्दुत्ववादी संस्थाएँ इसे एक संकीर्ण हिन्दू-राष्ट्र बनाने की बात करती हैं तो केवल समस्याऐं ही उत्पन्न होती हैं। हिन्दू-राष्ट्र के नाम पर हम समस्त भारतीयों को हिन्दू कहलवाने पर बाध्य नहीं कर सकते। सबको अपनी एक पहचान के साथ भारत

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 6 का शेष-हिन्दू राष्ट्र या भारतवर्ष

में सम्मान के साथ रहने का अधिकार है। भारत एक लोकतान्त्रिक देश है और हम बहु संख्यकवाद के नाम पर दूसरों पर अपनी बेतुकी निरर्थक धारणाओं को थोप नहीं सकते। अन्यथा हमारा भी वही हश्र होगा जो उन कट्टर मज़हब के नाम पर बने राष्ट्रों का हो रहा है जहां केवल बहुसंख्यक समुदाय की प्रत्येक बात को स्वीकार कर लिया जाता है चाहे वो कितनी ही अमानवीय अथवा अनुचित हो। इन हिन्दू संस्थाओं द्वारा प्राय: यह तर्क दिया जाता है कि इस देश में रहने वाले सभी मुस्लिम, सिक्ख, जैन, बौद्ध आदि हिन्दुओं से ही आये हैं, इसलिए मूल रूप में वे सभी हिन्दू हैं। लेकिन प्रश्न यह भी है कि वे हिन्दू कहाँ से आये हैं? हिन्दू कहलवाने से पूर्व उनके अपने पूर्वज स्वयं को क्या कहते थे। जिन महापुरूषों को आज हिन्दू ईश्वर तुल्य पूजते हैं उनमें से किसी भी महापुरूष ने स्वयं को हिन्दू नहीं कहा वे स्वयं को गर्व से आर्य कहते थे। आज भारत में बहुसंख्यावाद के बल पर तथा हिन्दू समुदाय की एकता के नाम पर समाज में धार्मिक अंधविश्वासों, पाखण्ड़ों तथा झूठे आडम्बरों का ही पोषण प्रसार हो रहा है। सत्य का निर्णय बहुसंख्यावाद से नहीं अपितु तथ्यपरक सत्यान्वेषण से होता है।

भारत ऐतिहासिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से एक अत्यन्त समृद्ध एवं उदार राष्ट्र है। यह मानवीय समानता तथा आपसी सहयोग से ही आगे बढ़ सकता है। लेकिन राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए किसी भी वर्ग या समुदाय का किसी भी स्तर पर अनावश्यक तृष्टिकरण नहीं होना चाहिए। राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए। राष्ट्रीय एकता को विखंडित अथवा विभाजित करने के कुत्सित प्रयासों के प्रति सदैव सावधान रहने की आवश्यकता है। अन्यथा सदियों के संघर्ष तथा असंख्य बलिदानों के पश्चात् प्राप्त की गई हमारी स्वतंत्रता संकट में पड़ सकती है।

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल,
शास्त्री नगर लुधियाना (पंजाब)
दूरभाषा:-91-9814629410
(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)
प्रवेश सूचना-सत्र 2018-2019

छठी कक्षा में (आयु+9 से -11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31.03.2018 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 01 अप्रैल 2018 दिन रविवार को प्रात: 8:00 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। **-मोहन लाल कालड़ा (मैनेजर)**

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

नैतिकता की अवधारणा और शिक्षा में उसका उपयोग

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

नैतिकता का सामान्य अर्थ है नीति सम्मत आचरण का अपने में आधान करना। नीति का अर्थ है समाज में एक दूसरे से किया जाने वाला व्यवहार और इस व्यवहार को जिस ढंग से किया जाता है उसे ही नैतिक व्यवहार कहा जाता है। नीति शब्द णीञ् प्रापणे धातु में 'स्त्रिया क्तिन्' प्रत्यय के लगाने से सम्पन्न होता है। 'नीयते व्यवस्थाप्यते स्वेषु स्वेषु सदाचारेषु लोका: यया सा नीति:।'

अर्थात् जिसके द्वारा जनता को सदाचार में स्थापित किया जाता है और कुमार्ग से हटा कर सुमार्ग में लगाया जाता है उसी को नीति कहा जाता है। फिर नीति के अनुरूप जीवन यापन करना ही नैतिकता के नाम से जाना जाता है।

महाभारत शान्ति पर्व के अध्याय 57 के श्लोक 15 में कहा गया है-

'चातु वर्णस्य धर्माश्चर-क्षितव्या महीक्षिता।
धर्म संकर रक्षा च राज्ञां धर्म: सनातन:।।

राजा को चारों वर्णों के धर्मों की रक्षा करनी चाहिए। प्रजा को संकरता से बचाना राजाओं का सनातन धर्म है।

हमारे देश में लोग प्राचीन काल में धर्म और नीति आधारित जीवन जीते थे। तभी तो उस समय राजा अश्वपति ने वैश्वानर ब्रह्म के जिज्ञासु ऋषियों को अपने राज्य की नैतिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहा था, 'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो नानाहिताग्निर्ना विद्वान् न स्वैरी स्वैरिणीकुत:।'

मेरे राज्य में न चोर हैं, न कृपण, न शराबी, न अग्निहोत्र करने वाले हैं। न मूर्ख हैं, न व्यभिचारी फिर व्यभिचारिणी स्त्री कहां होगी?

हमारे देश के चरित्र की महिमा का वर्णन करते हुए मनु कहते हैं- एतद् देश प्रसूतस्य सकाशाद ग्रजन्मन:। स्वंस्वंचरित्रं शिक्षेरन्पृथियां सर्वमानव:। मनु. 1139

हमारे देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों के सानिध्य में पृथ्वी पर रहने वाले सब मनुष्य अपने-अपने आचरण की शिक्षा ग्रहण करें।

देश के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाले नेताओं ने भी आदर्श जीवन को अपनाया हुआ था। उस काल में लोक कहा करते थे-'धन चला गया तो कोई बात नहीं, शरीर का स्वास्थ्य चला गया तो कुछ हानि हुई है और यदि चरित्र में कोई दोष आ गया तो मानो सब कुछ चला गया। धन की हानि की भरपाई पुन: पुरूषार्थ द्वारा की जा सकती है, स्वास्थ्य को भी नियमित जीवन और पौष्टिक आहार द्वारा पुन: प्राप्त किया जा सकता है परन्तु एक बार चरित्र के गिर जाने पर पुन: प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं की जा सकती है। परन्तु देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद धीरे-धीरे देश का चरित्र गिरता गया। चरित्र में सबसे अधिक गिरावट राजनेताओं, व्यापारियों तथा सरकारी सेवा में रत कर्मचारियों में पायी जाती है। इसी के फलस्वरूप मानव संसाधन में हमारा स्थान विश्व में 127वें स्थान पर है। देश में भ्रष्टाचार, दुष्कर्म, हत्या, अपहरण और रिश्वत का बाजार गर्म है। विदेशों में अब इसे घृणा के साथ दुष्कर्म में लिप्त देश कहा जा रहा है। विदेशी स्त्रियां भारत की यात्रा करने से डरती हैं। भारत को घोटलों का देश भी कहा जाता है! संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त प्राय है। वृद्धों की सेवा के लिए वृद्धाश्रम खोले जाने लगे हैं।

देश के मननशील लोगों और शिक्षा शास्त्रियों ने इस समस्या का हल खोजने के लिए 11, 12 व 13 फरवरी 2012 को गांधी दर्शन भवन राजघाट नई दिल्ली पर उपनिषद आयोजित किया। इसमें लोग लगभग 15 देशों के प्रतिष्ठित विचारकों और शिक्षा शास्त्रियों ने भाग लेकर नैतिक शिक्षा को शिक्षा में स्थान दिलाने के लिए प्रस्ताव स्वीकृत किया। भारत के मानव संसाधन विभाग का भी सहयोग रहा फिर। 12 मई 2012 को देश के चुने हुए 51 शिक्षा शास्त्रियों और मानव संसाधन विभाग के उच्च पदस्थ व्यक्तियों के सानिध्य में Indian Institute of public administration पर एक बैठक हुई। बैठक में नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम पर भी विचार हुआ। दोनों बैठकों का संचालन संस्कारम् के सम्पादक श्री ईश्वरदयाल जी ने किया। हर्ष की बात है कि सरकार ने भी सजगता दिखाई और फलस्वरूप केन्द्रीय विद्यालयों की कक्षाओं में नैतिक शिक्षा को स्थान मिल गया है। वर्तमान में देश की राजनीति में अपराधी व्यक्तियों का बोल बाला है। नौकरशाही और राजनेता देश को बेरहमी से लूट रहे हैं। व्यापारियों ने मिलावट के द्वारा देश के स्वास्थ्य को दाव पर लगा दिया है।

आर्य समाज अर्बन एस्टेट का 18वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अर्बन एस्टेट दुगरी के 18वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन एवं चित्र दो में गणमान्य व्यक्तियों को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विजय सरीन जी एवं अन्य

आर्य समाज अर्बन एस्टेट दुगरी का 18 वां वार्षिक उत्सव दिनांक 7 जनवरी 2018 को कम्युनिटी सैंटर फेस-2 दुगरी में मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ 11 कुण्डीय हवन यज्ञ से किया गया। इस यज्ञ के संयोजक श्री श्रवण कुमार बत्रा जी तथा ब्रह्मा श्री वेद प्रकाश शास्त्री जी थे। कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारिणीयों ने वेद पाठ किया। भारी संख्या में लोगों ने यजमान बनकर यज्ञ सम्पन्न किया और विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त किया। यज्ञ के पश्चात मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री विनोद ढल्ल जी ने ज्योति प्रज्वलित की। तत्पश्चात हीरो साईकल के प्रमुख श्री सुरेश मुंजाल जी की अध्यक्षता में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

आर्य कन्या गुरूकुल की छात्राओं ने सामूहिक रूप से भजन गायन किया। श्वेता बत्तरा, विन्नी गुलाटी और दक्ष आहुजा ने एक-एक भजन प्रस्तुत किया। श्रीमती पूर्णिमा रहेजा ने अपने मधुर कण्ठ से प्रभु भक्ति के भजन सुनाकर कार्यक्रम को सुन्दर बना दिया। सभी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। भजनों के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय जालन्धर से आए श्री सुरेश शास्त्री जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठ बनाने का सन्देश दिया। मंच का संचालन श्री श्रवण कुमार जी बत्रा ने कुशलतापूर्वक किया। आर्य समाज के प्रधान श्री पुरूषोत्तम अरोड़ा ने आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत तथा धन्यवाद किया। आर्य समाज के सभी पदाधिकारियों ने कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेश मुंजाल जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। जिला लुधियाना की सभी आर्य समाजों ने इस कार्यक्रम में विशेष रूप से भाग लिया। इस अवसर पर सर्वश्री श्रवण बत्रा, कर्मवीर गुलाटी, विकास बत्रा, राजेन्द्र बत्रा, अजय बत्रा, राकेश गुप्ता, राकेश सोनी, गुलशन अरोड़ा, विजय सरीन, प्रेम अरोड़ा आदि मौजूद थे।

श्रवण बत्रा प्रबन्धक
आर्य समाज दुगरी-लुधियाना

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में विद्यार्थियों को शैक्षणिक पुरस्कार वितरित

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री प्रवीण कुमार जी ए.डी.सी. बरनाला मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री भारत भूषण जी मेनन एडवोकेट, उप प्रधान डा. सूर्यकान्त जी शोरी, श्री केवल जिन्दल जी, सचिव भारत मोदी जी, सुखविन्द्र सिंह संधू, पवन सिंगला, प्रिंसीपल राम कुमार सोबती ने उनका स्वागत किया। ध्वजारोहण द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। श्री प्रवीण कुमार ए.डी.सी. ने ज्योति प्रज्वलित कर ज्ञान का दीपक जलाया। विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया जिसमें विशेष रूप से कन्या भ्रूण हत्या पर कटाक्ष, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का शानदार संदेश दिया। विद्यार्थियों द्वारा भंगडा, गिद्दा, नाटक, कोरियोग्राफी द्वारा देशभक्ति के गीत पेश करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। ए.डी.सी. प्रवीण कुमार तथा प्रबन्ध समिति के सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक पुरस्कार वितरित किये गये। खेलों में जिला, प्रान्तीय स्तर पर विजय रहने वाले एवं स्कूल का नाम रौशन करने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक दिये गये एवं सम्मानित किया गया। स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रिंसीपल राम कुमार सोबती जी ने प्रस्तुत की एवं स्कूल की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में शैक्षणिक पारितोषिक वितरण समारोह के अवसर पर ए.डी.सी. बरनाला श्री प्रवीण कुमार जी ज्योति प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुये। उनके साथ हैं प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री भारत भूषण मेनन, श्री सूर्यकान्त शोरी, प्रिंसीपल राम कुमार सोबती, श्री बसन्त शोरी एवं अन्य।

स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री भारत भूषण मेनन ने सम्बोधित करते हुये शिक्षा के साथ साथ खेलों में भी भाग लेने के लिये विद्यार्थियों को प्रेरित किया और हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया। ए.डी. सी. ने विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार प्राप्त करके समाज का कुशल निर्माण करने, देश के विकास में सहयोग करने, दिल से शिक्षा प्राप्त करने, अपने गुरुओं का सम्मान एवं आदर सत्कार करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्रीमती नीलम शर्मा, प्रिंसीपल रंजना मेनन, अनिल भूषण प्रधान व्यापार मंडल, श्री नरेन्द्र चोपड़ा, श्री वरूण दत्ता, श्री पवन सिंगला, श्री महेश कुमार, श्री पुरुषोतम बांसल, श्री मोहित कुमार, श्री बंसत शोरी, श्री कुलवन्त खत्री, श्री दीपक सोनी, शशि चोपडा, राजविन्द्र सिंह, प्रवीण कुमार, श्री रणजीत शास्त्री, श्री राम चन्द्र जी आर्य, श्री बलविन्द्र सिंह, श्री सूरजभान, सुमन अग्रवाल, निर्मला देवी, मीनाक्षा जोशी, सुषमा रानी, नवनीत कौर, रीना रानी, सुनीता गौतम, निधि गुप्ता के अतिरिक्त शहर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। प्रबन्ध समिति द्वारा ए.डी.सी.को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

लोहड़ी एवं मकर सक्रान्ति का पर्व मनाया गया

आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर में लोहड़ी एवं मकर सक्रान्ति का आर्य पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आर्य समाज के माननीय प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी एवं महामन्त्री श्री शशि कोमल जी की अध्यक्षता में कार्यक्रम का शुभारम्भ विशेष यज्ञ से किया गया। पं. पवन त्रिपाठी जी यज्ञ के ब्रह्मा थे। आर्य समाज के पुरोहित पं. तेजनारायण शास्त्री, पं. निरंजन देव एवं पं. सिकन्दर शास्त्री ने मिलकर वेदपाठ किया। इस अवसर पर स्थानीय भजनोपदेशक पं. मुकेश शास्त्री जी के मधुर भजन भी हुए। पं. मुरारी लाल जी एवं पं. ओम प्रकाश शास्त्री जी ने भी इस आर्य पर्व पर अपने-अपने विचार रखे। प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया ने लोहड़ी पर्व की बधाई दी। यज्ञ ब्रह्मा पं. पवन त्रिपाठी ने मकर सक्रान्ति पर्व के महत्त्व को बताया तथा सभी को शुभकामनाएं दी। इस मौके पर शहर की सभी समाजों ने भाग लिया। श्री पवन टण्डन, श्री शशि कोमल, श्री हरीश अविराय, श्री पवन शर्मा, प्रिं. सुश्री मनवीन कौर, श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय का सारा स्टॉफ मौजूद थे। कार्यक्रम के पश्चात यज्ञशेष का वितरण भी किया गया।

प्रचार मन्त्री आर्य समाज
श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।